Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 3, July-September, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

निपुण अभिभावक निपुण बच्चे : बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता हेतु एक पहल/ नवाचार

प्रियंका कुमारी
शिक्षिका
मध्य विद्यालय मलहाटोल, परिहार
जिला - सीतामढ़ी, बिहार
ई-मेल - pkjha2209@gmail.com

सारांश:

शिक्षा केवल स्कूल की चारदीवारी तक सीमित नहीं है, यह एक साझा यात्रा है जिसमें अभिभावक और बच्चे मिलकर कदम बढ़ाते हैं। "निपुण अभिभावक, निपुण बच्चे" एक ऐसी पहल है जो अभिभावकों को बच्चों की शिक्षा में सक्रिय भागीदार बनाने का प्रयास करती है। यह नवाचार माता-पिता को न केवल बच्चों के सहायक, बल्कि उनके प्रेरक और मार्गदर्शक के रूप में सशक्त बनाता है, ताकि बच्चे अपनी पूर्ण क्षमता तक पहुँच सकें।

इस पहल का मूल उद्देश्य अभिभावकों को बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूक और सक्षम बनाना है। अक्सर अभिभावक, विशेष रूप से ग्रामीण या कम शिक्षित पृष्ठभूमि से, यह मानते हैं कि शिक्षा का दायित्व केवल शिक्षकों का है या फिर वह बच्चों की शिक्षा में सहयोग करने में असक्षम है। इस सोच को बदलते हुए, यह कार्यक्रम अभिभावकों को सरल, व्यावहारिक और रचनात्मक तरीकों से बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में शामिल होने के लिए प्रेरित करता है। कार्यशालाओं,व्यक्तिगत/ सामुदायिक बैठकों और डिजिटल संसाधनों के माध्यम से, माता-पिता को बच्चों के साथ पढ़ने, कहानियाँ साझा करने, और रोजमर्रा की गतिविधियों को शिक्षण के अवसरों में बदलने की तकनीक सिखाई जाती हैं।

यह पहल बच्चों के शैक्षिक विकास के साथ-साथ अभिभावकों के आत्मविश्वास को भी बढ़ाती है। उदाहरण के लिए, एक माँ जो पहले बच्चों के सीखने में अपनी भूमिका को नगण्य समझती थी ,अब वह बच्चों को कहानियाँ ,गीत और विभिन्न घरेलू गतिविधियों की माध्यम से उसकी भाषा, संख्यात्मकता और कल्पनाशीलता को समृद्ध कर रही है। यह पहल विद्यालय एवं परिवार के स्तर पर शिक्षक-अभिभावक के बीच सहयोग को बढ़ावा देता है, जिससे वे बच्चों के सीखने की निरंतरता को कायम रख पाते है | वे एक-दूसरे से सीखते हैं और अपने अनुभव साझा करते हैं।

निपुण अभिभावक, निपुण बच्चे शिक्षा को एक पारिवारिक उत्सव में बदल देता है, जहाँ हर छोटा कदम बच्चे के भविष्य को उज्ज्वल करता है। यह पहल न केवल बच्चों को निपुण बनाती है, बल्कि अभिभावकों को भी निपुण बनाती है और उन्हें शिक्षा में उनकी भूमिका की महत्ता समझाती है, जिससे एक सशक्त और शिक्षित समाज का निर्माण होता है।

बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता हेतु एक पहल/ नवाचार

इस आलेख के माध्यम से आप जानेंगे कि अगर हमें बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता सुनिश्चित करवानी है तो बच्चों के साथ-साथ अभिभावकों को भी निपुण बनाने में अपना सहयोग देना होगा। साथ ही अभिभावकों के लिए ऐसे अवसरों का भी सृजन करना होगा जिसमें वह बच्चों के हित में अपनी भागीदारी दे सकें। मैंने **निपुण अभिभावक निपुण बच्चे** नवाचार का प्रयोग कर अभिभावकों के लिए एक अवसर उपलब्ध करवाने की कोशिश की है जिसके माध्यम से वो बच्चों की शिक्षा में सहभागी बन सकें।

किसी भी बच्चे के लिए परिवार प्रथम पाठशाला तथा माता-पिता/अभिभावक प्रथम शिक्षक होते हैं। बच्चे जब पहली बार विद्यालय आते हैं तो उस समय भी उनके पास बहुत सा ज्ञान और अनुभव होता है । वैसे तो बच्चों की शिक्षा में पूर्व में भी परिवार की भागीदारी के महत्व को स्वीकार किया गया है पर नई शिक्षा नीति 2020 में अभिभावकों एवं समुदाय की शिक्षा में सहभागिता पर विशेष बल देने की बात की गई है। राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा मंत्रालय द्वारा भी शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता से संबंधित डाक्यूमेंट प्रकाशित किए गए हैं जो पठनीय और व्यवहार में अनुकरणीय है।

साथ ही बिहार में भी एफ एल एन के अंतर्गत विकसित शिक्षक संदर्शिका में भी बड़े ही सुन्दर और सुगम तरीके से शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता सुनिश्चित करवाएं जाने के तरीकों का उल्लेख किया गया है। इसके अंतर्गत अभिभावकों के लिए एक गतिविधि कैलेंडर भी तैयार की गई है जिसकी प्रेरणा से अभिभावक घर पर ही विभिन्न शैक्षणिक प्रयासों को अंजाम दे सकते हैं जो कि बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के लक्ष्य प्राप्ति में सहायक है।

नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप बच्चों की शिक्षा में परिवार की महत्ती भूमिका को समझते हुए बतौर शिक्षक मैंने इसे व्यवहारिक रूप में लागू करने के लिए अपने विद्यालय में एक नवाचार शुरू किया है जिसका नाम दिया है - निपुण अभिभावक निपुण बच्चे। जैसा कि हमें पता है कि राज्य के अधिकांश विद्यालय ग्रामीण परिवेश में है और आज भी शैक्षिक संदर्भ में विद्यालय में अभिभावकों की सहभागिता सुनिश्चित करवाना आसान नहीं है। अभिभावकों की भी अपनी बहुत सी समस्याएं हैं जो बच्चों की शिक्षण प्रक्रिया में उनके सहभागी बनने के मार्ग में बाधक है और इन्हीं में से एक समस्या है - संकोच और जानकारी का अभाव। बहुत से अभिभावकों को यह जानकारी ही नहीं होती कि उनके बच्चों की शिक्षा में उनकी कितनी महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्हें लगता है कि शिक्षा देने का काम तो सिर्फ शिक्षक और विद्यालय से जुड़ा है। इसलिए मैंने अभिभावकों को बच्चों और विद्यालय से जोड़ने के लिए एक योजना बनाई ताकि वह सहजता से अपना जुड़ाव बच्चों की शिक्षा में महसूस कर सकें। इस योजना के अंतर्गत विद्यालय में अभिभावकों द्वारा बच्चों को कहानी सुनाया जाना था। शुरुआत से पहले मुझे लगा कि यह पहल आसान होगी परन्तु व्यवहार में ऐसा नहीं था। बाद में आगे चलकर इसमें हमने ड्राइंग/पेंटिंग की भी गतिविधि को जोड़ा ,ताकि बच्चों में प्रारंभिक लेखन कौशल का विकास किया जा सके | इस तरह से हमने कहानी ,कविता ,लोकगीत तथा ड्राइंग/पेंटिंग जैसी छोटी-छोटी गतिविधियाँ करवा कर अभिभावकों को बच्चों की शिक्षा में योगदान देने के लिए अनौपचारिक रूप में प्रशिक्षित करना आरंभ किया |इसमें अभिभावक को महसूस भी नही होता था कि उन्हें कुछ सिखाने की कोशिश की जा रही है |

अगर हमें बच्चों की शिक्षा में परिवार/अभिभावक/समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित करनी है तो इस तरह के कई और
छोटे-छोटे प्रयास करने होंगे ताकि अभिभावकों के अंदर यह आत्मविश्वास आ सके कि वह भी बच्चों के सीखने में योगदान दे सकते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि बच्चे के साथ-साथ अभिभावकों को भी निपुण करने की जिम्मेदारी हम शिक्षकों को निभानी होगी|

सच कहूं तो एनसीएफ हो या बीसीएफ या फिर कोई अन्य डाक्यूमेंट्स जो शिक्षा में परिवार/समुदाय की भूमिका पर बल देते हैं, को अब व्यावहारिक रूप में लागू करने की आवश्यकता है और यह कार्य शिक्षक बखूबी कर सकते हैं।

चूंकि, मुझे राज्य के शिक्षकों के लिए निर्मित हैंडबुक शिक्षक संदर्शिका में शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता सुनिश्चित करवाने के संबंध में बतौर लेखक लेखन कार्य का अवसर मिला था जिसमें हमनें अपने राज्य की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए परिवार की भागीदारी के महत्व और इसे किस प्रकार व्यवहारिक रूप में लागू करें,को स्पष्ट रूप से लिखा है जिससे कि अभिभावकों की सहभागिता के संबंध में बहुत से विकल्प मिलते हैं। अतः अनुरोध है कि सभी शिक्षक इस डाक्यूमेंट को भी अवश्य पढ़ें और विद्यालय के अभिभावकों को बच्चों की शिक्षा में भागीदार बनने में निपुण बनाएं ताकि हम कह सके कि निपुण अभिभावक के साथ अब हर बच्चा निपुण बनेगा। आइए ,नीचे लिखे कुछ दृश्यों को समझ कर अभिभावकों की सहभागिता को समझने का प्रयास करते हैं -

दृश्य -1

साक्षी के दादाजी उसकी कक्षा में बैठकर उसके सभी सहपाठियों के बीच कहानी सुना रहे है और वो मन ही मन गर्वीली सी मुस्कान लिए सबके साथ कहानी सुन रही है।

दृश्य -2

आदित्य अपनी दादी के साथ बैठकर एक सादे पेज पर कलर पेन्सिलों के साथ ड्राइंग कर रहा है। उसकी दादी और वो दोनों एक ही समय में एक ही पेज पर ड्राइंग कर रहे है और आपस में बातचीत भी कर रहे है।

दृश्य -3

महिमा अपने घर के आंगन में अन्य भाई-बहनों के साथ मां के निकट बैठी है और उसकी कक्षा की शिक्षिका उसकी मां से उन्हीं की भाषा में बात कर रही है और बता रही है कि एक शिक्षक और अभिभावक साथ में मिलकर काम करें तो बच्चों का सर्वांगीण विकास कितना सरल हो जाएगा। साथ ही वो अपने बुनियादी कक्षाओं के बच्चों की शिक्षा में कैसे अपना सहयोग दे सकती है।

दृश्य -4

स्कूटी से जा रही शिक्षिका रास्ते में रुक कर खेतों से घास के भारी-भरकम गट्ठर सर पर लिए जा रही महिलाओं को रोककर और उनके गट्ठर नीचे रखवाकर पेड़ की छांव में बैठकर उन्हें अपने पोते-पोतियों को रात में सोते समय कोई कहानी या अनुभव सुनाने की बात करती है और उनकी कविता -कहानी से बच्चों के शिक्षण पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में बताती है।

उपर्युक्त चारों ही दृश्य बताते है कि संबंधित शिक्षक (स्वयं मैं) द्वारा बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता सुनिश्चित करवाने हेतु प्रयास किए जा रहे है।

आज मैं इस आलेख के माध्यम से आप सबों के साथ इसी विषय पर बात करना चाहती हूं। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि बच्चों के प्रथम शिक्षक माता-पिता को ही माना जाता है। खासकर बुनियादी कक्षाओं के बच्चों के संदर्भ में यह बात शत-प्रतिशत लागू होती है। बच्चे शहरी क्षेत्र के हो या ग्रामीण क्षेत्र के उन सभी के अभिभावकों को इस दिशा में जागरूक होने की आवश्यकता है | फ़िलहाल यहाँ मैं आपको ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय की पृष्ठभूमि के सन्दर्भ में आलेख को प्रस्तुत कर रही हूँ परन्तु देखा जाये तो यह सभी क्षेत्रों के लिए उतना ही प्रासंगिक है |

अब यहां एक दृश्य की कल्पना कीजिए कि

* बुनियादी कक्षाओं में अध्ययनरत एक छात्र विद्यालय से घर आता है। घर पर उसके पास एक असाक्षर या कम पढ़े-लिखे अभिभावक है जो अपने जीवकोपार्जन के लिए अहले सुबह से देर शाम तक दैनिक मजदूरी में लगा हो और वो अपने बच्चों से विद्यालय में हुए गतिविधियों या पढ़ाई या बच्चों की मनोस्थिति के संबंध में कोई भी बात नहीं कर के भोजन करते हैं और सो जाते है। उनकी व्यस्त, मेहनत एवं थकान भरी जीवनशैली उन्हें बच्चों की शिक्षा की दिशा में सोचने का रत्तीभर भी अवसर नहीं देती।

* उपर दिए गए समान परिस्थितियों में भी अगर कोई अभिभावक अपने बच्चों को अगर दिन में समय नही मिलने पर भी रात में सोने वक्त भी अगर वो बच्चों के साथ थोड़ा भी वक्त बिताते है और उससे दिन भर की गतिविधियों के बारे में जानकारी लेते है या फिर सोते समय अपनी ही भाषा में कोई गीत या कहानी सुनाते है तो यह विद्यालय और घर में सीखने की निरंतरता को बनाए रखने में सहायक होता है।

आप स्वयं विचार कर सकते है कि दोनों में से किस बच्चे का मानसिक या भाषा विकास बेहतर ढंग से हो पाएगा। ठीक ऐसी ही दैनिक परिस्थितियों से मेरे विद्यालय के अभिभावकों को भी गुजरना पड़ता है, क्योंकि मेरे विद्यालय की अधिकांश आबादी सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक रूप से अत्यंत ही पिछड़ी हुई अवस्था में है। ऐसे में बच्चों के अधिगम पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ना एक स्वाभाविक क्रिया है।

नई शिक्षा नीति 2020 का डाक्यूमेंट्स जब प्रकाशित हुआ था तो उसमें स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि देश सीखने के संकट से जूझ रहा है। असर की रिपोर्ट बताती है कि पांचवी कक्षा के बच्चे तीसरी कक्षा के पाठ नही पढ़ पा रहे है। बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान पर युद्ध स्तर पर कार्य करने की दिशा में बात कही गई। साथ ही सबको एकसमान स्तर पर लाने के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा पर व्यापक रूप में गंभीरता से कार्य करने की योजनाएं बनाई गई। आज इसी का परिणाम है कि पूरे देश में और हमारे राज्य बिहार में भी मिशन निपुण के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए जोर-शोर से प्रयास जारी है। इसी क्रम में में जब मुझे एफएलएन के अंतर्गत शिक्षक संदर्शिका में पैरेंटल इंगेजमेंट विषय पर लेखन कार्य का अवसर मिला तब मैंने अपने सभी जमीनी अनुभवों को लेखन में समेटने का भरपूर प्रयास किया और इसका परिणाम यह हुआ कि मैं इस विषय को लेकर के पूर्व से अधिक गंभीर एवं संवेदनशील बनी।

बुनियादी कक्षाओं को भावी शिक्षण का आधार माना जाता है। इसलिए मेरे अंदर की यह भावना और गहरी हो चली थी कि अगर देश सीखने के संकट से गुजर रहा है तो इसके लिए शिक्षक हो, अभिभावक हो या फिर समुदाय... सबको आगे बढ़ कर सहयोग करना होगा। हमारे राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर निर्मित विभिन्न दस्तावेज (डॉक्यूमेंटस) भी इस बात की वकालत करते है। साथ ही मैंने भावानात्मक स्तर पर भी अपने यहां के अभिभावकों की कठिन जीवनशैली को देखकर यह महसूस किया कि उन्हें हमारे सहयोग

की आवश्यकता है और हमें ही आगे बढ़ कर उनकी मदद करनी होगी। चूँकि पूर्व में भी मैं बच्चों को विद्यालय से जोड़ने के लिए गृह भ्रमण कर अभिभावकों से संवाद स्थापित करती थी पर निपुण मिशन की शुरुआत के बाद लगा कि एक औपचारिक शुरुआत इस दिशा में किए जाने की आवश्यकता है | इसलिए मैंने अभिभावकों को बच्चों की शिक्षा में सहभागिता सुनिश्चित करवाने हेतु उन्हें बातचीत और कुछ गतिविधियों के माध्यम से प्रशिक्षित करने का विचार किया और इसी सोच के फलस्वरूप मैंने वर्ष 2023 में "निपुण अभिभावक निपुण बच्चे" नामक नवाचार का प्रारंभ किया। इस नवाचार के अंतर्गत अभिभावकों को अपने कक्षा-कक्ष में आमंत्रित कर उनसे कहानी, कविता, लोकगीत तथा ड्राइंग/पेंटिंग आदि गतिविधियां बच्चों के साथ करवाना आरंभ किया। साथ ही गृह भ्रमण कर अभिभावकों से संवाद भी स्थापित किया और उन्हें बहुत से व्यावहारिक तरीकों के बारे में जानकारी दी कि वह किस प्रकार अपने बच्चों के सीखने में सहायक बन सकते है। इन सारी गतिविधियों के पीछे कुछ प्रमुख उद्देश्य थे जो इस प्रकार है ----

* बच्चों के सर्वांगीण विकास में अभिभावकों की भागीदारी सुनिश्चित करना ताकि बच्चे घर और विद्यालय दोनों स्थानों पर सीखने की निरंतरता बनाए रखें।
* मौखिक भाषा विकास को प्रोत्साहित करना।
* फाइन मोटर स्किल्स का विकास ।
* अभिभावकों और बच्चों के बीच मजबूत भावानात्मक संबंध बनाना।
* शिक्षा में सहभागिता की भावना को बढ़ावा देना।
* बच्चों की रचनात्मकता और अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना।

चूंकि उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति इतना आसान नहीं है जब अभिभावकों की पृष्ठभूमि मेरे विद्यालयी परिवेश की तरह हो। फिर भी मैं प्रयासरत रही और आज भी हूं। कई बार मैं निराश भी हुई पर मेरे इस नवाचार को ECCE & FLN के शिक्षा विशेषज्ञ श्री प्रवीण चंद्रा का नैतिक समर्थन मिलता रहा जिसने मेरे इस प्रयास की निरंतरता को बनाए रखने में मदद किया।

यह बहुत मुश्किल था कि अभिभावकों को कक्षा-कक्ष के अंदर तक लाया जाए और उनसे बच्चों की बात-चीत करवाकर उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान किया जाए। चूंकि पुरुष अभिभावकों की उपस्थिति असंभव सी थी क्योंकि वो या तो प्रवासी मजदूर के रूप में अथवा दैनिक मजदूरी के लिए अन्यत्र होते थे। ऐसे में महिला अभिभावकों को संलग्न करना अनिवार्य रहा क्योंकि उनके कार्यों का स्थल निश्चित होता था। महिलाएं घरेलू कार्यों में और कृषि कार्य अथवा मवेशियों के लिए चारा या ईंधन इक्ट्ठा करने के लिए आस-पास के खेतों में प्रायः मिल जाया करती थी। सबसे पहले हमने गृह भ्रमण के दौरान संवाद स्थापित किए तो कभी रास्ते में तो कभी खेतों के मुंडेर पर। क्योंकि उन्हें यह विश्वास दिलाना आवश्यक था कि वह भी बच्चों की शिक्षा में योगदान दे सकती है और बच्चों के सर्वांगीण विकास में उनका भी उतना ही महत्व है जितना कि हम शिक्षकों का। लगभग अभिभावक यह कह कर ही पल्ला झाड़ने की कोशिश करते कि उन्हें कोई कहानी नही आती। ज्यादा पुछने पर भावुक हो कर बताती कि एक तो वो कभी स्कूल नहीं गए और ना ही उनके माता-पिता ने उन्हें कभी कोई खिसा-कहानी कही। इसलिए उनसे नहीं हो पाएगा। फिर भी मैंने उन्हें समझाया कि आप सभी क्या चाहती है जो अनुभव आपको नही मिला...वो आपके बच्चों को भी ना मिले...!

बुनियादी उम्र के बच्चे अपनी सारी जरुरतों के लिए सबसे अधिक अपनी मां या दादी पर ही निर्भर होते है ऐसे में अगर आप अपना महत्व और जिम्मेदारी नही समझेंगे तो फिर बच्चों का सर्वांगीण विकास कैसे होगा। उनके चेहरे के भाव मुझे अपनी बात को आगे बढ़ाने का अवसर देती है और मैं अपनी बातों को आगे बढ़ाते हुए उनसे अनुरोध करती हूं कि अगर उन्हें कहानी नही आती तो कोई बात नहीं,आप बच्चे को अपने जीवन की, अपने बचपन की यादें साझा कर सकती है, कोई भजन या कोई गीत जो गांव-घर में गाया जाता है वह सुना सकती है या फिर कुछ नही तो अपने बच्चों से विद्यालय में हुई दिनभर की गतिविधियों या शिक्षकों के संबंध में जानकारी प्राप्त कर बच्चों को बातचीत करने का अवसर दे सकती है.... और जहां तक कहानियों की बात है आप विद्यालय आए या कोई स्थान निर्धारित करें मैं रोज एक कहानी सुना दिया करुंगी आपलोगों को....!

इस तरह से बहुतेरे अभिभावकों से संवाद स्थापित करने के बाद मेरी कक्षा तक बहुत से अभिभावक पहुंचे और उन्होंने अपना प्रायोगिक अनुभव प्राप्त किया। कभी कविता, कहानी, लोकगीत तो कभी अच्छी आदतों के संबंध में बातें तो कभी बच्चों के लेखन कौशल विकास के लिए ड्राइंग-पेंटिंग का अनुभव तो कभी मिट्टी से टीएलएम निर्माण आदि। इन गतिविधियों ने बच्चों के शिक्षण पर कितना प्रभाव डाला, मैं यह तो दावा नहीं कर सकती। पर हां, मुझे बतौर शिक्षक एक आत्मिक संतुष्टि होती रही कि मैं बदलाव लाने की दिशा में प्रयासरत हूं।

इस पहल का असर शिक्षक -अभिभावक संगोष्ठी पर भी पड़ा। जहां पहले एक भी माता अभिभावक की उपस्थिति सुनिश्चित करवाना एक कठिन कार्य होता था। आज यह एक सामान्य बात हो गई है। समय-समय पर विशेष रूप से आयोजित शिक्षक- अभिभावक संगोष्ठी में माता अभिभावकों ने अपनी उपस्थिति से जता दिया कि वह अपने बच्चों की शिक्षा में भागीदार बनने के लिए पूरी तरह से तैयार हो चुकी है।

मेरा यह आलेख लिखने का एकमात्र उद्देश्य यह है कि हमें बुनियादी कक्षाओं के बच्चों को अधिक से अधिक अनुभव देने की आवश्यकता है और यह अभिभावकों के सहयोग के बिना संभव नहीं है। साथ ही बच्चों के साथ-साथ अभिभावकों को भी हम शिक्षकों के सहयोग और

मार्गदर्शन की आवश्यकता है। हमें उन्हें प्रायोगिक अनुभव देने होंगे, खासकर तब जब वह एकदम विपरीत और कठिन पृष्ठभूमि से संबंधित है। वैसे इस नवाचार का उपयोग करने के फलस्वरूप आप बच्चों की शिक्षा में निम्न प्रभाव देखने की अपेक्षा रख सकते है —-

1. मौखिक भाषा विकास में प्रगति-

जब अभिभावक बच्चों को कहानियाँ या कविताएँ सुनाते हैं, तो बच्चों की श्रवण क्षमता, शब्द भंडार और भाव अभिव्यक्ति में सुधार होता है। साथ ही बच्चों में सुनने और बोलने के प्रति रुचि बढ़ती है, जिससे संवाद कौशल विकसित होता है।

2. फाइन मोटर स्किल और लेखन क्षमता का विकास-

ड्राइंग व पेंटिंग जैसी गतिविधियाँ बच्चों की उंगलियों की पकड़, हाथ की स्थिरता और दिशा ज्ञान को मजबूत करती हैं, जो लेखन कौशल की नींव होती है।रंग भरना, रेखाएँ खींचना, आकृतियाँ बनाना आदि कार्यों से बच्चों में लेखन की तैयारी (pre-writing skills) बेहतर होती है।

3. अभिभावकों के सहयोग से आत्मविश्वास में वृद्धि-

जब बच्चे देखते हैं कि उनके माता-पिता स्कूल की गतिविधियों में सक्रिय हैं, तो वे आत्मविश्वासी और प्रेरित महसूस करते हैं।उन्हें यह अनुभव होता है कि शिक्षा केवल स्कूल तक सीमित नहीं, बल्कि घर और स्कूल दोनों की साझा जिम्मेदारी है।

4. समग्र मानसिक व सामाजिक विकास-

सामूहिक गतिविधियों में भाग लेने से बच्चों में सहयोग, प्रतीक्षा करना, अनुशासन, और भावनात्मक समझ विकसित होती है।अभिभावकों की सहभागिता बच्चों के व्यवहार और सोचने की प्रक्रिया को सकारात्मक दिशा देती है।

5. सीखने का परिवेश समृद्ध होता है-

घर जैसा सहयोगी वातावरण विद्यालय में बनने से बच्चों के लिए सीखना एक आनंददायक अनुभव बन जाता है।बच्चे अधिक सक्रिय, उत्साही, और जिज्ञासु हो जाते हैं।

6. घर और विद्यालय के बीच की दूरी कम होती है-

अभिभावकों की सहभागिता से शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक के बीच एक सशक्त त्रिकोणीय संबंध बनता है।इससे बच्चों को हर स्तर पर एकजुट समर्थन मिलता है, जो उनकी निरंतर प्रगति में सहायक होता है।

निष्कर्ष:

"निपुण अभिभावक, निपुण बच्चे" पहल शिक्षा को एक साझा सपने में बदल देती है, जहाँ अभिभावक और बच्चे मिलकर सीखने की यात्रा पर चलते हैं। यह कार्यक्रम इस विश्वास पर टिका है कि बच्चों का भविष्य केवल स्कूलों पर निर्भर नहीं, बल्कि माता-पिता की सक्रिय भागीदारी से और भी उज्ज्वल हो सकता है। अभिभावकों को सशक्त बनाकर, यह पहल न केवल बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों को बढ़ाती है, बल्कि पारिवारिक बंधनों को भी मजबूत करती है। इस पहल ने दिखाया है कि जब अभिभावक अपने बच्चों के सीखने में शामिल होते हैं, तो बच्चों में आत्मविश्वास, जिज्ञासा और रचनात्मकता का विकास होता है। साथ ही विद्यालय और घर के बीच सीखने की निरंतरता को कायम रखता हैं | एक माँ, जो कभी किताबों से दूर रहती थी, अब वह तवे पर रोटी पलटने के साथ अपने बच्चे के साथ किताब के पन्ने पलटकर उसकी कल्पनाशक्ति को पंख देती है। शिक्षक की मदद से माताएं घरेलू संसाधनों की मदद से छोटी-छोटी गतिविधियाँ यथा –चावल-दाल के दाने अलग करना अथवा विभिन्न फल एवं सब्जी की मदद से गिनती या जोड़ करना,पैटर्न एवं चित्र बनाना आदि बच्चों के साथ कर उनकी शिक्षा में जुड़ाव महसूस कर रही हैं | ये छोटे-छोटे पल बच्चों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनते हैं और अभिभावकों को उनकी भूमिका का गर्व महसूस कराते हैं।

कई शिक्षकों ने इस नवाचार में रूचि दिखाई और को अपनाया भी | कार्यशालाओं और व्यक्तिगत एवं सामुदायिक मंचों के माध्यम से, यह पहल अभिभावकों को सरल उपाय सिखाती है, जैसे रोजमर्रा की बातचीत को शिक्षण का अवसर बनाना, बच्चों के सवालों को

प्रोत्साहित करना, और उनकी छोटी उपलब्धियों को सराहना। यह न केवल बच्चों की शैक्षिक प्रगति को बढ़ावा देता है, बल्कि माता-पिता में भी आत्मविश्वास जगाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ संसाधन सीमित हैं, यह पहल अभिभावकों को सिखाती है कि प्यार, समय और समर्पण ही सबसे बड़े संसाधन हैं। अंततः, निपुण अभिभावक, निपुण बच्चे शिक्षा को एक सामूहिक उत्सव बनाता है, जहाँ हर परिवार अपनी कहानी लिखता है। यह पहल समाज को यह संदेश देती है कि शिक्षा का आधार घर से शुरू होता है। जब अभिभावक और बच्चे एक-दूसरे के सहयात्री बनते हैं, तो न केवल बच्चे निपुण बनते हैं, बल्कि एक सशक्त और जागरूक समाज का निर्माण होता है, जो भविष्य की नींव रखता है।

References

1. NEP-2020, NIPUN Guidelines , Shikshak Sandarshika –FLN (BIHAR)
2. Desforges, C., & Abouchaar, A. (2003). *The impact of parental involvement on student outcomes: An overview*. Department for Education and Skills. https://dera.ioe.ac.uk/6300/1/Parental_Involvement.pdf
3. Epstein, J. L. (2011). *School, family, and community partnerships: Preparing educators and improving schools* (2nd ed.). Westview Press.
4. Goodall, J., & Montgomery, C. (2014). Parental involvement to parental engagement: A continuum. *Educational Review, 66*(4), 399–410. https://doi.org/10.1080/00131911.2013.781576
5. Hoover-Dempsey, K. V., & Sandler, H. M. (1997). Why do parents become involved in their children's education? *Review of Educational Research, 67*(1), 3–42. https://doi.org/10.3102/00346543067001003
6. Jeynes, W. H. (2012). A meta-analysis of the efficacy of different types of parental involvement programs for urban students. *Urban Education, 47*(4), 706–742. https://doi.org/10.1177/0042085912445643
7. Kumar, R., & Lauermann, F. (2018). Cultural beliefs and parenting practices: Impact on child development in India. *International Journal of Educational Development, 60*, 83–91. https://doi.org/10.1016/j.ijedudev.2017.08.005
8. Majumdar, M. (2017). Parental involvement in schooling: Perspectives from India. In S. Hegde & D. K. Bhattacharjee (Eds.), *Education and society in India* (pp. 123–140). Sage Publications.
9. National Council of Educational Research and Training. (2020). *National Education Policy 2020*. Ministry of Education, Government of India. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
10. Pomerantz, E. M., Moorman, E. A., & Litwack, S. D. (2007). The how, whom, and why of parents' involvement in children's academic lives: More is not always better. *Review of Educational Research, 77*(3), 373–410. https://doi.org/10.3102/003465430305567
11. Saini, S., & Shukla, R. (2019). Parental engagement in early childhood education: A study of rural India. *Journal of Early Childhood Research, 17*(3), 234–248. https://doi.org/10.1177/1476718X19851892
12. Sharma, A., & Pandey, S. (2021). Role of parents in shaping educational outcomes in low-resource settings in India. *Indian Journal of Education Studies, 8*(2), 45–60.
13. Sheldon, S. B. (2019). *Improving student outcomes through family and community engagement*. Routledge.
14. UNESCO. (2015). *Education for all 2000–2015: Achievements and challenges*. UNESCO Publishing. https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000232205
15. Yadav, S., & Sharma, P. (2022). Bridging the gap: Parental involvement in foundational literacy and numeracy in India. *Education and Development, 42*(1), 89–104. https://doi.org/10.1080/07380569.2021.1987321